UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015 (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. – 5-9

''इंदौर शहर के शिक्षकों के जीवन मूल्यों का अध्ययन करना''

श्रीमती योगिता राठौर
आइसेक्ट विश्वविद्यालय, भोपाल

श्रीमती चिन्तन वर्मा
शिक्षा अध्ययनशाला, दे.अ.वि.वि. इंदौर

सारांश
मूल्यों की शिक्षा बालकों को घर से ही प्राप्त होती है। परन्तु आज के भौतिकवादी युग की बढ़ती व्यवस्था में कामकाजी अभिभावकों के पास समय का अभाव होने से यह दायित्व भी शिक्षकों पर ही आ गया है, क्योंकि परिवार के बाद बालक अपना अधिकांश समय शिक्षकों के साथ व्यतीत करता है। बालक के लिए शिक्षक ही आदर्श होता है। शिक्षक अपने आचरण, विद्यालय के प्रभावी वातावरण, प्रातः कालीन सभा, विषय सामग्री, पाठ्य सहगामी क्रियाओं, नाटकों, खेलकूद, समाज सेवा, महापुरूषों की जीवनी आदि के माध्यम से बालकों में जीवन मूल्यों को प्रसारित कर सकता है। इस हेतु प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य ***''इंदौर शहर के शिक्षकों के जीवन मूल्यों का अध्ययन करना'' है।*** *इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु इंदौर शहर के 25 प्रशिक्षित एवं 25 अप्रशिक्षित शिक्षकों का चयन यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा किया गया। प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। शोधकार्य में प्रदत्त के संकलन हेतु कु. शशि गिलानी द्वारा निर्मित मूल्य मापनी'A new Test for Study of Values' का उपकरण के रूप में प्रयोग किया है। शोध निष्कर्ष के रूप में सामाजिक, धार्मिक एवं आर्थिक मूल्यों के आधार पर प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के मध्य सार्थक अन्तर पाया गया है।*

प्रस्तावना–

देश व मानव जाति का कल्याण व भविष्य बालक–बालिकाओं पर निर्भर है। अतः बालक–बालिकाओं के सर्वांगिण विकास हेतु यह अत्यन्त ही आवश्यक है, कि उनमें प्रायोजनाओं एवं सुविधाओं द्वारा उच्च स्तरीय जीवन मूल्यों का विकास किया जाए। व्यक्ति जिस समाज में रहता है, उसके मूल्य वांछनीय, महत्वपूर्ण एवं आदरणीय होते है। मूल्य व्यक्ति की अभिवृत्ति, निर्णय, चयन, व्यवहार एवं दृष्टिकोण को प्रतिबिम्बित करता है। मूल्यों से हमारे चिन्तन, भावनाओं का एवं क्रियाओं का निर्धारण होता है।इन जीवन मूल्यों का विकास केवल शिक्षा द्वारा ही संभव है। अतः शिक्षकों का यह कर्त्तव्य है कि वे बालक–बालिकाओं में इन जीवन मूल्यों का विकास करें। मूल्य की अवधारणा मनुष्य के प्रत्येक चयन, निश्चय, निर्णय तथा कार्य में विद्यमान है। जब हम दो वस्तुओं अथवा मनोंरथों में चुनाव करते है तो उस मनोरथ को प्राप्त करने का निश्चय करते है, जो अधिक श्रेष्ठ है, और इसी निर्णय के अनुसार जीवन में कार्य करते है। इस चयन निर्णय तथा निश्चय में ही उन वस्तुओं या मनोरथों के मूल्य की अवधारणा छुपी रहती है। ऑलपोर्ट के अनुसार ''मूल्य एक मानव विश्वास है जिसके आधार पर मनुष्य वरीयता प्रदान करते हुए कार्य करता है।'' वैसे तो युग परिवर्तन के साथ मूल्य भी परिवर्तित होते रहते है। किन्तु कुछ मूल्य कालजयी प्रकृति के होते है– सामाजिक मूल्य, धार्मिक मूल्य, आर्थिक मूल्य, नैतिक मूल्य, राजनैतिक मूल्य, सांस्कृतिक मूल्य, सौन्दर्यात्मक मूल्य, सैद्धांतिक मूल्य आदि

सामाजिक मूल्य–

सामाजिक मूल्यों के अन्तर्गत सहयोग, परोपकार, सहानुभूति, प्रेम, क्षमा, अनुशासन, दया, दान, समाज सेवा की भावना, अहिंसा, कर्त्तव्यपरायणता आदिमूल्य सम्मिलित रहते है।

धार्मिक मूल्य–

धार्मिक मूल्यों के अन्तर्गतसच्चाई, ईमानदारी, आत्मानुशासन, विश्वबंधुत्व, अपरिग्रह, करूणा, अहिंसा, आत्म–नियंत्रण, विनम्रता, शांति, शुचिता, क्षमा, करूणा, सहनशीलता, सेवाभाव, सादा जीवन आदि मूल्य आते है।

UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015 (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. – 5-9

आर्थिक मूल्य–
आर्थिक मूल्य मुख्य रूप से रूपय, पैसे, संपत्ति, भौतिकता एवं विलासिता की इच्छा पर आधारित होते है।

जीवन मूल्य व शिक्षा–
जीवन और उससे जुडे मूल्य व उनका विकास एवं शिक्षा का घनिष्ठ संबंध इस तथ्य से स्पष्ट है, कि शिक्षा का प्रमुख लक्ष्य बालक को उसकी धार्मिक और सामाजिक विरासत प्रदान करना है। यह जीवन मूल्यों को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरित करती है।

इस प्रकार बालकों को धार्मिक और सामाजिक विरासत से जुडे इन जीवन मूल्यों के प्रत्येक क्षेत्र में कार्य करनेके निश्चित प्रतिमान मिल जाते है। जीवन मूल्यों पर चलकर घर, देश एवं समाज का निर्माण होता है। मूल्य यानी जीवन के रास्तों को तय करने के लिये कुछ मूलभूत आधार। यही जीवन मूल्य हमारे लिये एक सुरक्षा कवच बन जाते है। इनसे हमें हर परिस्थिति का सामना करने की शक्ति मिलती है।वस्तुतः मूल्य हमारे जीवन में सही कार्य करने के लिए पथ प्रदर्शक होते है। वैसे तो बालकों के मूल्यों की शिक्षा उनकी समाजीकरण की प्रकिया के साथ परिवार के माध्यम से प्रारंभ हो जाती है, परन्तु वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जीवन मूल्यों के संदर्भ में अभिभावकों की भूमिका एकल परिवार के कारण न्यून होती जा रही है। परिणाम स्वरूप जीवन मूल्य के संवर्धन हेतु अध्यापकों की भूमिका अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है, क्योंकि परिवार के बाद बालक अपना अधिकांश समय शिक्षकों के साथ व्यतीत करता है। बालक के लिए शिक्षक ही आदर्श होता है। शिक्षक अपने आचरण, विद्यालय के प्रभावी वातावरण, प्रातः कालीन सभा, विषय सामग्री, पाठ्य सहगामी क्रियाओं, नाटकों, खेलकूद, समाज सेवा, महापुरूषों की जीवनी आदि के माध्यम से बालकों में जीवन मूल्यों को प्रसारित करता है। इस प्रकार जीवन मूल्य के संवर्धन में शिक्षा व शिक्षकों का महत्वपूर्ण योगदान है।

उदेश्य :–
1. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के सामाजिक मूल्यों का अध्ययन करना।
2. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के धार्मिक मूल्यों का अध्ययन करना।
3. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के आर्थिक मूल्यों का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ :–
1. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के सामाजिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नही है।
2. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के धार्मिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नही है।
3. प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के आर्थिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नही है।

परीसीमाएँ :–
1. प्रस्तुत शोधकार्य इन्दौर शहर तक ही सीमित है।
2. प्रस्तुत शोधकार्य में प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों को सम्मिलित किया गया है।
3. प्रस्तुत शोधकार्य में केवल अशासकीय विद्यालयों के शिक्षकों को सम्मिलित किया गया है।

न्यादर्श :–
प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु इन्दौर शहर के अशासकीय विद्यालयों के 25 प्रशिक्षित एवं 25 अप्रशिक्षित शिक्षकों का चयन यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा किया गया।

शोध विधि :–
प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

प्रयुक्त उपकरण :–

UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015 (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. – 5-9

शोधकार्य में प्रदत्त संकलन के लिए कु. शशि गिलानी द्वारा निर्मित मूल्य मापनी'*A new Test for Study of Values'* का उपकरण के रूप में प्रयोग किया है।

सांख्यिकी तकनीक :–
प्रस्तुत शोध में सांख्यिकी तकनीक के रूप में मध्यमान, मानक विचलन व टी–टेस्ट का प्रयोग किया गया।

प्रदत्तों का विश्लेषण एंव व्याख्या–
शोध के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए आकडों की शोध समस्या के संदर्भ में विश्लेषण एवं व्याख्या की गयी है।

तालिका – 1
प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के सामाजिक मूल्यों की तुलना

Group	N	Mean	S.D.	DF	T-value	Sig.
प्रशिक्षित	25	41.08	2.75	48	2.71	S*
अप्रशिक्षित	25	38.84	3.06			

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि टी का मान ($t = 2.71$, $P < 0.05$) है जो कि DF= 48पर 0.05 स्तर पर सार्थक है एवं सारणी मान 2.06 से अधिक है। इसका अर्थ है कि प्रशिक्षित शिक्षकों के माध्यसामाजिक मूल्य प्राप्तांक अप्रशिक्षित शिक्षकों के माध्य सामाजिक मूल्य प्राप्तांकों से सार्थक रूप से भिन्न है। इस स्थिति में शून्य परिकल्पनाकि **''प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के सामाजिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नही है।''** निरस्त की जाती है।

तालिका – 2
प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के धार्मिक मूल्यों मूल्यों की तुलना

Group	N	Mean	S.D.	DF	T-value	Sig.
प्रशिक्षित	25	32.72	1.83	48	11.94	S**
अप्रशिक्षित	25	38.28	1.42			

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि टी का मान ($t = 11.94$, $P < 0.01$) है जो कि DF= 48पर 0.01 स्तर पर सार्थक है एवं सारणी मान 2.78 से अधिक है। इसका अर्थ है कि प्रशिक्षित शिक्षकों के माध्य धार्मिकमूल्य प्राप्तांक अप्रशिक्षित शिक्षकों के माध्य धार्मिक मूल्य प्राप्तांकों से सार्थक रूप से भिन्न है। इस स्थिति में शून्य परिकल्पनाकि **''प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के धार्मिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नही है।''** निरस्त की जाती है।

तालिका – 3
प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के आर्थिक मूल्यों की तुलना

Group	N	Mean	S.D.	DF	T-value	Sig.
प्रशिक्षित	25	31.80	6.25	48	6.26	S**
अप्रशिक्षित	25	40.36	2.73			

UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015 (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. – 5-9

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि टी का मान (t =6.26, P < 0.01) है जो कि DF= 48पर 0.01 स्तर पर सार्थक है एवं सारणी मान 2.78 से अधिक है। इसका अर्थ है, कि प्रशिक्षित शिक्षकों के माध्य आर्थिक मूल्य प्राप्तांक अप्रशिक्षित शिक्षकों के माध्य आर्थिक मूल्य प्राप्तांकों से सार्थक रूप से भिन्न है। इस स्थिति में शून्य परिकल्पनाकि **''प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के आर्थिक मूल्यों में कोई सार्थक अंतर नही है।''** निरस्त की जाती है।

निष्कर्ष :–

उपर्युक्त प्रसंगाधीन तालिका–1 के आंकडो के तुलनात्मक विवेचन से स्पष्ट है कि प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के सामाजिक मूल्यों में सार्थक अंतर है। अर्थात् माध्यों के अवलोकन से ज्ञात होता है कि प्रशिक्षित शिक्षकों की तुलना मेंअप्रशिक्षित शिक्षकों के सामाजिक मूल्य निम्न स्तरीय पाए गए।

तालिका–2 के आंकडो के तुलनात्मक विवेचन से स्पष्ट है कि प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के धार्मिक मूल्यों में सार्थक अंतर है। अर्थात् माध्यों के अवलोकन से ज्ञात होता है कि प्रशिक्षित शिक्षकों की तुलना में अप्रशिक्षित शिक्षकों के धार्मिक मूल्य उच्च स्तरीय पाए गए है।

तालिका–3 के आंकडो के तुलनात्मक विवेचन से स्पष्ट है कि प्रशिक्षित एवं अप्रशिक्षित शिक्षकों के आर्थिकमूल्यों में सार्थक अंतर है। अर्थात् माध्यों के अवलोकन से ज्ञात होता है कि प्रशिक्षित शिक्षकों की तुलना में अप्रशिक्षित शिक्षकों के आर्थिक मूल्य उच्च स्तरीय पाए गए है।

शैक्षिक उपयोगिता–

बालकों एवं अभिभावक वर्ग हेतु उपयोगिता :

(1) छात्र–छात्राओं को विद्यालय के सामाजिक कार्यक्रमों में रूचिपूर्वक भाग लेना चाहिए।
(2) अभिभावक वर्ग को सामाजिक, धार्मिक एवं आर्थिक मूल्यों से संबंधित जानकारी बालकों को देना चाहिए।

शिक्षक वर्ग हेतु उपयोगिता :–

(1) शिक्षक वर्ग को बालकों के समक्ष स्वयं को सामाजिक, धार्मिक एवं आर्थिक मूल्यों से ओतप्रोत आदर्श रूप में प्रस्तुत करना चाहिए।
(2) शिक्षकों को अभिभावक वर्ग को बुलाकर सांस्कृतिक मूल्यों के संबंध की जानकारी देना चाहिए।

भावी अध्ययन हेतु सुझाव :–

1. हायर सेकेण्डरी स्तर के छात्र–छात्राओं में जीवन मूल्यों के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन ।
2. कला एवं विज्ञान के संकाय के छात्र–छात्राओं में मूल्यों का अध्ययन।
3. स्नातक एवं स्नाकोत्तर स्तर पर छात्र–छात्राओं में जीवन मूल्यों के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन।
4. शहरी एवं ग्रामीण स्तर पर विद्यालयीन छात्र–छात्राओं में मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन।
5. इन्दौर जिले के अलावा इस विषय का क्षेत्र संभाग और राज्य स्तरीय शालाएँ भी हो सकती हैं।
6. विश्वविद्यालयीन स्तर पर भी सामाजिक, धार्मिक एवं आर्थिक मूल्यों से संबंधित कार्य किया जा सकता है।
7. भारत वर्ष के मूल्योंऔर दूसरे देशों के मूल्यों से तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. आबसेट (1966) : ''शिक्षकों में सैद्धान्तिक तथा राजनैतिक उच्च स्तर के मूल्य''।
2. बारनाथ एवं फोडिर्श (1961) : ''शिक्षा के समूह में धार्मिक एवं सामाजिक मूल्य''।
3. बेनमिकर तथा टेन्नीसन (1970) : ''मूल्यों का शिक्षा स्तर के शिक्षकों पर अध्ययन।''
4. i, बुच.एम.वी, : तृतीय शोध सर्वेक्षण : शिक्षा में अनुसंधान सोसायटी फॉर एजुकेशन रिसर्च एण्ड डेव्लपमेंट बड़ौदा,(1973–78, 1983–88)

   ii, बुच.एम.वी, : चतुर्थ शोध सर्वेक्षणः शिक्षा अनुसंधान सोसायटी फॉर एजुकेशन रिसर्च एवं डेवलपमेन्ट बड़ौदा के सौजन्य से।

UDGAM VIGYATI, Volume 2, 2015 (November)
Online ISSN 2455-2488
Page No. – 5-9

5. द्वारिका डॉ, लाभसिंह प्रसाद एवं भार्गव महेशः मनोविज्ञान एवं शिक्षा सांख्यिकी के मूल आधार एच.पी. भार्गव बुक हाउस,आगरा 2000
6. बैस नरेन्द्र सिंह (1988–89) ''सागर नगर के प्रशिक्षित अध्यापकों के मूल्यों एवं आकांक्षा स्तर का अध्ययन।
7. गालब (1969) :''सेकेण्डरी स्कूल के शिक्षकों की व्यवसाय संतुष्टि एवं मूल्यों का निराक्षणात्मका अध्ययन।''
8. हेनरी ई. गेरिटः ''शिक्षा एवं मनोविज्ञान में सांखियकी के प्रयोग : 1972 कल्याणी पब्लिशर्स आगरा।'' पृ.क्र. 576
9. क्रिश्चनर तथा होगेन (1968) :''शिक्षकों में सैद्धान्तिक, आर्थिक, राजनैतिक, सौन्दर्यात्मक तथा धार्मिक मूल्यों का अध्ययन।''
10. मेकलीन तथा अन्य (1955) :''पुरूष शिक्षकों की शिक्षा स्तर पर निम्न आर्थिक मूल्य तथा उच्च सामाजिक मूल्य।''
11. आर.ए.शर्माः फंडामेंटल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, लॉयल बुक डिपो, मेरठ 1999।पृ.क्र. 555
12. सिंह डॉ. रामपाल : ''शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी''।
13. सक्सेना स्वरूप एन.आर. : शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धांत।
14. सिंह हरभजन एल. (1973) : ''दिल्ली के शिक्षकों में मूल्यों का अध्ययन।''
15. कपिल, एच.के., अनुसंधान विधियॉ, तृतीय संस्करण, आगरा, विनोद, पुस्तक मंदिर, पृ. 558
16. राय, पारसनाथ, अनुसंधान परिचय, तृतीय संस्करण आगरा, लक्ष्मीनारायण अग्रवाल शिक्षण संबंधी प्रकाशन, पृ.क्र.356